ISSN 0973-2616

सी एस आई आर समाचार

वर्ष 23 अंक 10 अक्टूबर 2006

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् का गृह–बुलेटिन

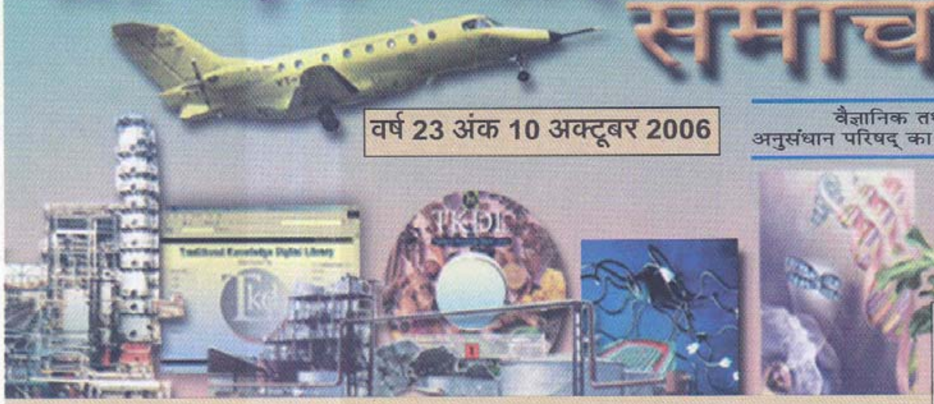

वैज्ञानिक समारोह

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने निम्नलिखित पुरस्कार दिये

•शान्ति स्वरूप भटनागर पुरस्कार (वर्ष 2006)
•सीएसआईआर हीरक जयन्ती प्रौद्योगिकी पुरस्कार 2006
•ग्रामीण विकास में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी अनुसंधान के लिए सीएसआईआर पुरस्कार

विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं भू विज्ञान मंत्री श्री कपिल सिब्बल ने निम्नलिखित पुरस्कार प्रदान किये

•सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2006
•सीएसआईआर प्रौद्योगिकी पुरस्कार 2006 तथा
•जीनो क्लस्टर - बायो इंफोर्मेटिक्स सॉफ्टवेयर
•कन्ट्रीब्यूशन्स ऑफ सीएसआईआर टू अन्टार्कटिक रिसर्चः क्लेक्टेड रिप्रिन्ट्स नामक सार संग्रह का विमोचन किया

डॉ.आर.ए.माशेलकर, महानिदेशक, सीएसआईआर ने निम्नलिखित पुरस्कार दिये

• स्कूली विद्यार्थियों के लिए सीएसआईआर हीरक जयन्ती अन्वेषण पुरस्कार 2006।
साइंस सफारी नामक फिल्म का प्रदर्शन - एक फिल्म जो भारत में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की नवीनतम उपलबधियों पर प्रकाश डालती है।

"सर्वश्रेष्ठ का आगमन शेष है"

डॉ. आर.ए. माशेलकर, महानिदेशक, सीएसआईआर का अभिनन्दन

""डॉ. माशेलकर से मुझे कहना है कि, आपने महान उत्कृष्टता के साथ देश और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की सेवा की है। मैं देश के लोगों और सरकार की तरफ से आपके महान कार्यों की सराहना करता हूं। हम सभी को आपकी उपलबधियों पर गर्व है। लेकिन मैं इस आशा और प्रार्थना के साथ अपना सम्बोधन समाप्त करता हूं कि हमने आपकी सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा अभी तक नहीं देखी है। हमें आपकी सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा का इंतजार है। मेरी कामना है आपका जीवन और आपका कार्य देश के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी समुदाय की पीढ़ियों को प्रेरणा देता रहेगा"।

-- ***डॉ. मनमोहन सिंह, प्रधानमंत्री, भारत सरकार तथा अध्यक्ष, सीएसआईआर, विज्ञान भवन, नई दिल्ली में सीएसआईआर स्थापना दिवस व्याख्यान 26 सितम्बर 2006***

"आज हम पाते हैं कि सीएसआईआर का बाह्य वित्त प्रवाह रु. 340 करोड़ प्रति वर्ष से अधिक हो गया है जिसमें से एक तिहाई निजी सैक्टर से लिया गया है। महोदय, आप यह स्वीकार कर पायेंगे कि सीएसआईआर का प्रदर्शन इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए और भी प्रशंसनीय हो जाता है कि भारतीय उद्योग का आर एण्ड डी में निवेश मात्र आधे प्रतिशत का है और वैसी ही उनकी बिक्री आय (सेल्स टर्नओवर) है। यह रुपान्तरण कौन लाया है? इसके लिए क्रेडिट डॉ. माशेलकर तथा सीएसआईआर परिवार को जाता है"।

"सीएसआईआर को ऐसी प्राथमिक श्रेणी के स्तर तक पहुंचाने का श्रेय डॉ. माशेलकर के परिश्रम से भरपूर प्रयासों तथा दृढ़ता को जाता है, जिन्होंने पिछले वर्षों में पेटेण्ट साक्षरता, सक्षमता निर्माण तथा आईपी प्रबन्धन को बढ़ावा दिया है"।

-- ***श्री कपिल सिब्बल, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं भू विज्ञान मंत्री, उपाध्यक्ष, सीएसआईआर, विज्ञान भवन, नई दिल्ली में सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह के दौरान दिया गया भाषण, 26 सितम्बर 2006***

सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

छब्बीस सितम्बर वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के लिए बहुत ही विशिष्ट दिवस है। यह परिषद का जन्मदिवस है। वर्ष 1942 में इस दिन सीएसआईआर की स्थापना हुई थी। प्रतिवर्ष देशभर में फैली 38 प्रयोगशालाओं/संस्थानों में इस दिवस को बहुत उत्साह और उल्लास से मनाया जाता है। यह गत वर्ष किये गये कार्यों को तथा भविष्य के लिए योजना - और अधिक समर्पण के साथ राष्ट्र की सेवा करने को मनाने का अवसर है। यह पुरस्कार तथा सम्मान प्रदान करके विज्ञान में उत्कृष्टता को मान्यता देने का अवसर है। मुख्य समारोह, जिसमें बड़ी संख्या में प्रमुख वैज्ञानिकों तथा गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया, का आयोजन नई दिल्ली में किया गया।

नई दिल्ली में आयोजित इस वर्ष के स्थापना दिवस समारोह में बहुत से अद्वितीय अभिलक्षण थे। सर्वप्रथम, एकमात्र समारोह के स्थान पर तीन प्रमुख समारोह आयोजित किये गये। ये समारोह विज्ञान भवन, होटल ली मेरिडियन तथा सीएसआईआर मुख्यालय में आयोजित किये गये। वास्तव में, सम्पूर्ण दिवस पूरा दिन विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के सर्वश्रेष्ठ के लिए समर्पित था। भारत के प्रधानमंत्री तथा अध्यक्ष, सीएसआईआर डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा इस दिन शान्तिस्वरूप भटनागर पुरस्कार (2006), सीएसआईआर हीरक जयन्ती प्रौद्योगिकी पुरस्कार (2006) तथा ग्रामीण विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के लिए सीएसआईआर द्वारा स्थापित नये पुरस्कार का वितरण; विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं भू विज्ञान मंत्री तथा उपाध्यक्ष, सीएसआईआर श्री कपिल सिब्बल द्वारा सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार (2006) और सीएसआईआर प्रौद्योगिकी पुरस्कार (2006) का वितरण; तथा महानिदेशक, सीएसआईआर, डॉ. आर.ए. माशेलकर द्वारा स्कूली विद्यार्थियों को सीएसआईआर हीरक जयन्ती आविष्कार पुरस्कार (2006) प्रदान किया गया।

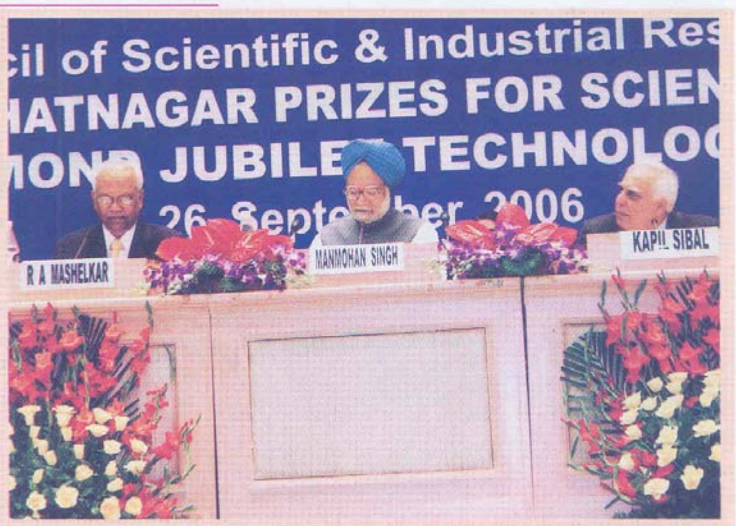

डॉ. मनमोहन सिंह, भारत के प्रधानमंत्री तथा अध्यक्ष, सीएसआईआर, श्री कपिल सिब्बल, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं भू विज्ञान मंत्री और उपाध्यक्ष, सीएसआईआर (दायें) तथा डॉ. आर.ए. माशेलकर, महानिदेशक, सीएसआईआर विज्ञान भवन में आयोजित सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह में

श्री कपिल सिब्बल ने **जीनो-क्लस्टर - एक बायोइंफॉर्मेटिक्स साफ्टवेयर,** जिसका विकास जीनोमिकी एवं समवेत जीवविज्ञान संस्थान तथा जलाजा प्रौद्योगिकी द्वारा नवशताब्दी भारतीय प्रौद्योगिकी नेतृत्व प्रारम्भ (एनएमआईटीएलआई) कार्यक्रम के अन्तर्गत संयुक्त रूप से किया गया है, का शुभारम्भ किया तथा **कन्ट्रीब्यूशन्स ऑफ सीएसआईआर टू एन्टार्कटिक रिसर्च: क्लेक्टेड रिप्रिन्ट्स** नामक सार संग्रह का विमोचन भी किया।

साइंस सफारी, भारत में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की नवीनतम उपलब्धियों तथा आविष्कारों पर प्रकाश डालती एक फिल्म - जोकि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा भू विज्ञान मंत्रालय तथा नेशनल ज्योग्राफिक चैनल का संयुक्त प्रयास है, को भी इस अवसर पर प्रदर्शित किया गया।

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने इस वर्ष का सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह व्याख्यान भी दिया।

डॉ. मनमोहन सिंह तथा श्री कपिल सिब्बल ने अपने सम्बोधनों में डॉ. रघुनाथ अनन्त माशेलकर, एफआरएस, महानिदेशक, सीएसआईआर की सीएसआईआर को एक प्रयोक्ता केन्द्रित तथा मार्किट अभिमुखी वैज्ञानिक औद्योगिक संगठन में परिवर्तित करने के लिए भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा समारोह में उपस्थित प्रख्यात वैज्ञानिकों के समूह ने खड़े होकर डॉ. माशेलकर का अभिनन्दन किया। डॉ. माशेलकर इस वर्ष 31 दिसम्बर को अपने कार्यभार से मुक्त हो रहे हैं।

विज्ञान भवन में सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

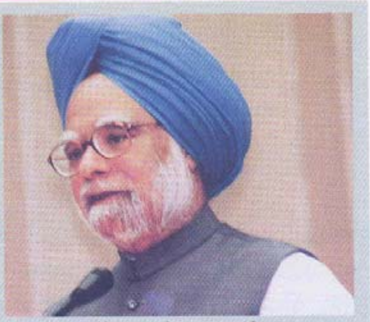

प्रधानमंत्री ने वर्ष 2006 के लिए शान्तिस्वरूप भटनागर पुरस्कार, सीएसआईआर हीरक जयन्ती पुरस्कार तथा ग्रामीण विकास में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी खोज के लिए सीएसआईआर पुरस्कार प्रदान किये।

स्थापना दिवस समारोह का आरम्भ विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित प्रातः एक भव्य समारोह से हुआ। गणमान्य अतिथियों तथा प्रख्यात वैज्ञानिकों से भरपूर यह समारोह सीएसआईआर का अपने उद्देश्यों के प्रति वचनबद्धता तथा गत वर्ष में प्राप्त की गयी उपलब्धियों का जश्न मनाने के लिए था।

प्रधानमंत्री, भारत सरकार, डॉ. मनमोहन सिंह, जो सीएसआईआर के अध्यक्ष भी हैं ने पुरस्कार प्रदान किये।

• 13 प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों को उनके उत्कृष्ट अनुसंधान योगदान के लिए राष्ट्र का विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का सर्वोच्च सम्माननीय शान्तिस्वरूप भटनागर पुरस्कार (2006)।

• तेजस नेटवर्क्स इंडिया लिमिटेड, एक बंगलौर स्थित आविष्कार चालित कम्पनी जो द्वितीय पीढ़ी के विकास के लिए ऑप्टीकल (एमडीएच/सोनेट) नेटवर्किंग उत्पाद के विकास तथा भारत से उनके सफल वाणिज्यीकरण में रत है, को वर्ष 2006 के लिए सीएसआईआर हीरक जयन्ती पुरस्कार।

• केन्द्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान (सीएलआरआई), चैन्नई को भारतीय चर्म उद्योग में अत्यधिक मात्रा में संलग्न लोगों के जीवन में सकारात्मक सुधार लाने वाली विभिन्न जटिल प्रौद्योगिकियों के अभिकल्पन, विकास तथा हस्तांतरण में योगदान देने के लिए ग्रामीण विकास के वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी आविष्कारों के लिए सीएसआईआर द्वारा स्थापित नया पुरस्कार।

(प्रशस्ति पत्र तथा पुरस्कार विजेताओं की प्रतिक्रिया को विस्तार से जानने के लिए कृपया पृष्ठ सं.148-152 देखें)।

डॉ. मनमोहन सिंह ने सीएसआईआर स्थापना दिवस व्याख्यान भी दिया (प्रधानमंत्री का व्याख्यान कृपया पृष्ठ सं.144 पर देखें)।

श्री कपिल सिब्बल, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं भू विज्ञान मंत्री तथा उपाध्यक्ष, सीएसआईआर ने समारोह की अध्यक्षता की तथा श्रोताओं को सम्बोधित किया (श्री कपिल सिब्बल का व्याख्यान पृष्ठ सं.146 पर देखें)

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह तथा श्री कपिल सिब्बल, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं भू विज्ञान मंत्री को स्मृति चिह्न भी प्रदान किये गये। इससे पूर्व, डॉ. आर.ए. माशेलकर, महानिदेशक, सीएसआईआर ने श्रोताओं की तालियों की गड़गड़ाहट के मध्य अवगत कराया कि आज सीएसआईआर के जन्मदिवस के साथ-साथ ही प्रधानमंत्री का जन्मदिवस भी है। डॉ. माशेलकर ने पुरस्कार विजेताओं के नामों की घोषणा की तथा प्रशस्ति पत्रों को पढ़ा।

श्री संजय नाईक, सीईओ, तेजस नेटवर्क्स इंडिया लिमिटेड ने अपने संक्षिप्त स्वीकृति भाषण में सीएसआईआर को आभारपूर्ण धन्यवाद दिया और कहा कि वर्ष 2006 के लिए सीएसआईआर हीरक जयन्ती प्रौद्योगिकी पुरस्कार प्राप्त करना तेजस टीम के लिए गौरव की बात है (कृपया पृष्ठ सं.150-151 देखें)।

ग्रामीण विकास में वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिक आविष्कार के लिए सीएसआईआर के प्रथम पुरस्कार की घोषणा करते हुए डॉ. माशेलकर ने डॉ. टी. रामासामी, पूर्व निदेशक, सीएलआरआई तथा वर्तमान में सचिव, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार, जो इस समारोह में उपस्थित न हो सके, के योगदानों का स्मरण किया। डॉ. ए.बी. मंडल, कार्यकारी निदेशक, डॉ. एस. नायडु ने टीम-सीएलआरआई की ओर से पुरस्कार ग्रहण किया। अपने स्वीकृति भाषण में डॉ. मंडल ने कहा कि इस पुरस्कार को प्राप्त कर सीएलआरआई स्वयं को सम्मानित अनुभव कर रही है (कृपया पृष्ठ सं.151-152 पर देखें)।

डॉ. माशेलकर ने धन्यवाद प्रस्ताव भी दिया। (कृपया पृष्ठ सं.148 देखें)

सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

विज्ञान भवन में शान्ति स्वरूप भटनागर पुरस्कार समारोह में प्रधानमंत्री का भाषण 26 सितम्बर 2006, नई दिल्ली

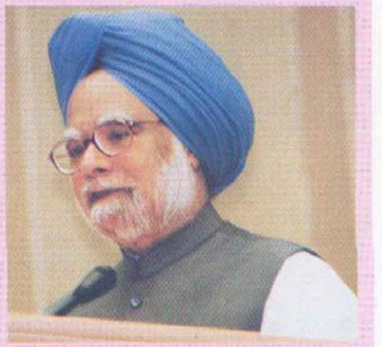

मुझे वैज्ञानिकों के इस विशिष्ट समूह में उपस्थित होकर काफी खुशी हो रही है। आपमें से हर एक राष्ट्र निर्माता है। मैं यहां उपस्थित प्रत्येक पुरस्कार विजेता को और सीएसआईआर के 64वें स्थापना दिवस के अवसर पर परिषद के स्टाफ और कर्मियों को बधाई देता हूं। सीएसआईआर के अध्यक्ष की हैसियत से मुझे परिषद की उपलब्धियों पर गर्व है।

भारत कारण और इसकी प्रासंगिता के प्रति दृढ़प्रतिज्ञता के आधार पर और जैसा कि जवाहर लाल नेहरू कहा करते थे, वैज्ञानिक सोच अपना कर ही विश्व समुदाय में अपना सही स्थान प्राप्त कर सकता है और विकासशील अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख केन्द्र बन सकता है। इसलिए, देश के सभी लोगों के लिए सम्मानपूर्ण जीवन और आत्म सम्मान की तलाश में विज्ञान और प्रौद्योगिकी को पथप्रदर्शक-की भूमिका निभानी होगी, ताकि हम विश्व समुदाय में अपना सही स्थान प्राप्त कर सकें। मैं अत्यन्त प्रतिष्ठित वैज्ञानिक सम्मान, शान्तिस्वरूप भटनागर पुरस्कार के विजेताओं को बधाई देता हूं। वर्ष 1961 में प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने सबसे पहले ये पुरस्कार प्रदान किए थे। तब से लेकर आज तक ये पुरस्कार देश में वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्र में महान ख्याति प्राप्त कर चुके हैं।

मुझे यह जानकर अत्यन्त खुशी है कि अभी तक 400 से ज्यादा भटनागर पुरस्कार विजेताओं में से कोई भी देश छोड़कर विदेशों में रोजगार की तलाश के लिए नहीं गया है। यह वास्तव में सराहनीय है। मुझे आशा है कि इस वर्ष के पुरस्कार विजेता भी देश में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रोत्साहन के प्रति अपनी वचनबद्धता के जरिए राष्ट्र की सेवा के प्रति समर्पित रहेंगे।

मैं इस अवसर पर तेजस नेटवर्क और सेन्ट्रल लैदर रिसर्च इंस्टीट्यूट को भी बधाई देता हूं। मुझे पता है कि सीएलआरआई के कार्यों ने भारत के चमड़ा क्षेत्र से जुड़े लगभग 14 लाख लोगों की आजीविका में सुधार किया है। मेरी कामना है कि आपका यह उदाहरण राष्ट्र के लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के विकास का मार्गनिर्देशक बने।

आज देश के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्र में कौन सी प्रमुख चुनौतियां हैं? यदि आपूर्ति की ओर नजर डालें, तो हमें कुशल वैज्ञानिकों और प्रौद्योगिकीविदों की उपलब्धता बढ़ानी है। "विस्तार," "समावेश" और "उत्कृष्टता" के बीच यथोचित संतुलन के जरिए यह कार्य किया जाना चाहिए। यदि मांग पक्ष की ओर नजर डालें, तो हमें "प्रौद्योगिकी संचालित त्वरित समग्र विकास" को बढ़ावा देना है। मैं इस पर और प्रकाश डालना चाहूंगा।

सबसे पहला मुद्दा प्रौद्योगिकीविदों और वैज्ञानिकों की संख्या का है। मुझे जानकारी है कि प्रति दस लाख लोगों में केवल 157 वैज्ञानिक तथा इंजीनियर हमारे पास हैं, जो अनुसंधान तथा विकास के कार्यों में लगे हैं। कोरिया में इनकी संख्या हमसे 50 गुना तथा अमरीका और जापान में हमसे 30 गुना ज्यादा है। गुणवत्ता और प्रतिफल एक और मुद्दा है। मुझे बताया गया है कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक पत्रिकाओं में वैज्ञानिक अनुसंधान दस्तावेजों के प्रकाशन के मामले में चीन पिछले दस सालों में भारत से आगे निकल गया है। दरअसल हमारी तुलना में उनके वैज्ञानिक दस्तावेज तीन गुना ज्यादा प्रकाशित होते हैं।

हमारी सरकार विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आपूर्ति, मांग और उत्पादकता का विस्तार करने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ है। सौ वर्ष के अन्तराल के बाद, हम अब विज्ञान, शिक्षा और अनुसंधान के तीन नए भारतीय संस्थान (आईआईएसईआर) स्थापित कर रहे हैं। इनमें से हरेक संस्थान विज्ञान शिक्षा ओर अनुसंधान को परस्पर जोड़ने के मामले में अपने आप में अद्वितीय होगा।

देश की श्रेष्ठ प्रतिभाएं विज्ञान की ओर आकर्षित नहीं हो रही हैं और जो हैं भी, वे विज्ञान के क्षेत्र में बनी नहीं रहती हैं। मैं प्रधानमंत्री से सम्बद्ध वैज्ञानिक सलाहकार समिति के साथ जब भी बैठक करता हूं, मुझे यही समस्या बताई जाती है। इसलिए,

सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

हमें ऐसे तौर-तरीके तलाशने चाहिए, जिनसे इन विषयों को देश के बच्चों और युवाओं के लिए और ज्यादा आकर्षित बनाया जा सके। हमें स्कूली और कॉलेज की शिक्षा को नया स्वरूप देना होगा, ताकि बच्चे विज्ञान के प्रति स्वाभाविक रूप से जिज्ञासु बनें।

हमें उच्च शिक्षा के मौजूदा संस्थानों में उत्कृष्टता को भी बनाए रखना है। ये संस्थान विश्व में पहले ही अपनी पहचान बना चुके हैं और यह विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ विद्वानों की भर्ती के जरिए ही प्राप्त किया जा सकता है। हमें उत्कृष्टता हासिल करने के लिए अनुकूल माहौल बनाना होगा। ऐसा लग सकता है कि विस्तार, समावेश और उत्कृष्टता आपस में मेल न खाने वाले लक्ष्य हैं। लेकिन मैं ऐसा नहीं मानता। मुझे विश्वास है कि दृढ़ निश्चय और अभिनव सोच के साथ हम इनमें तालमेल बिठा सकते हैं।

विस्तार की प्रक्रिया भी समग्र और प्रासंगिक होनी चाहिए। देश की सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को हमारी कई सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का व्यावहारिक समाधान तलाशने में लगाना हमारी वास्तविक चुनौती है। मलेरिया के लिए यदि हमारे पास कोई अच्छा टीका हो तो आप अनुमान लगा सकते हैं कि इसका क्या प्रभाव पड़ेगा? क्या हम इस बात का अनुमान लगा सकते हैं कि विकेन्द्रीयकृत विद्युत आपूर्ति के लिए कम लागत वाले ईंधन कोश और फोटोवोल्टिक्स में नई खोज का हमारे लोगों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा? इसलिए हमें ऐसे रास्ते और जरिए तलाशने चाहिए, जिनके द्वारा देश के प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों को इन बुनियादी सामाजिक चिन्ताओं से निपटने के लिए प्रेरित किया जा सके। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में विशाल क्षमता है। इसके जरिए हम देश के लोगों की बुनियादी जरूरतों को पूरा कर सकते हैं। इसलिए, हमें देश की विशाल क्षमताओं का पूरी तरह दोहन करने के लिए दृढ़ निश्चय के साथ प्रयास करने होंगे।

बहुधा कहा जाता है कि हम आज ऐसी दुनिया में रहते हैं जहां एक दूसरे पर निर्भरता तेजी से बढ़ रही है, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी ज्ञान अप्रत्याशित गति से विकास की ओर अग्रसर है। जिस वैश्वीकृत दुनिया में आज हम रहते हैं, उसमें विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के विकास में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के आकर्षक अवसर मौजूद हैं। इसलिए, साझा प्रौद्योगिकी मुद्दों से निपटने के लिए समन्वित अन्तर्राष्ट्रीय प्रयासों की जरूरत है। दुनिया की ऊर्जा संबंध जरूरतों को पूरा करने, बीमारियों से निपटने, बेहतर शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल, दुनिया की बढ़ती जनसंख्या की अनाज संबंधी जरूरतें पूरी करने में दुनिया के देश आपस में सहयोग कर सकते हैं। ये तो केवल कुछ उदाहरण हैं। ऐसे और भी कई क्षेत्र हो सकते हैं। हमें ऐसी प्रणालियां तलाशनी हैं जो अन्तर्राष्टीय सहयोग के प्रयासों को संभव और प्रासंगिक बना सकें।

हमें विकसित देशों में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्र में निजीकरण पर भी ध्यान देना होगा। बहुराष्ट्रीय कम्पनियां जैव-प्रौद्योगिकी, औषधि, सूचना प्रौद्योगिकी और ऊर्जा के क्षेत्र में नए ज्ञान के सृजन में बढ़-चढ़कर भूमिका निभा रही हैं। विश्व समुदाय के सामने नए ज्ञान के सृजन के लिए पर्याप्त प्रोत्साहन के रास्ते तलाशने और साथ ही गरीब देशों को इस ज्ञान का लाभ कम कीमतों पर उपलब्ध कराने जैसी चुनौतियां हैं। इन जुड़वा जरूरतों बीच तालमेल बैठाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय प्रयासों की जरूरत है।

इस संदर्भ में, बौद्धिक सम्पदा अधिकार के संरक्षण की अन्तर्राष्ट्रीय प्रणाली में इन दोनों मुद्दों पर पर्याप्त ध्यान दिया जाना चाहिए। विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की प्रगति ने विश्व अर्थव्यवस्था के अन्तर्राष्टीयकरण में ठोस योगदान दिया है। अब हमारे सामने यह चुनौती है कि विकास की ओर अग्रसर विश्व अर्थव्यवस्था का इस प्रकार प्रबंध किया जाए कि इससे गरीब और अमीर सभी देशों के हितों को बढ़ावा मिले। अब ऐसी ठोस रणनितियां बनाने का समय आ गया है, जिससे वैश्वीकरण और ज्ञान क्रान्ति को सम्पूर्ण मानवता के लिए फायदेमंद बनाया जा सके। इन अन्तरराष्ट्रीय चिन्ताओं का अर्थपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण समाधान ढूंढने के वैज्ञानिक प्रयासों में भारत को आगे बढकर भाग लेना होगा।

मैं एक बार फिर उन पुरस्कार विजेताओं को बधाइ देता हूं, जिन्होंने अपने क्षेत्रों में अपनी विशेष पहचान बनाई है। मुझे आशा है कि वे उत्कृष्टता की नई ऊंचाइयों को छूने के लिए हमेशा प्रेरणा लेते रहेंगें।

डॉ. माशेलकर से मुझे कहना है कि, आपने महान उत्कृष्टता के साथ देश और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की सेवा की है। मैं देश के लोगों और सरकार की तरफ से आपके महान कार्यों की सराहना करता हूं। हम सभी को आपकी उपलबधियों पर गर्व है। लेकिन मैं इस आशा और प्रार्थना के साथ अपना सम्बोधन समाप्त करता हूं कि हमने आपकी सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा अभी तक नहीं देखी है। हमें आपकी सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा का इंतजार है। मेरी कामना है आपका जीवन और आपका कार्य देश के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी समुदाय की पीढ़ियों को प्रेरणा देता रहेगा।

सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

श्री कपिल सिब्बल, विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा भू विज्ञान मंत्री द्वारा विज्ञान भवन में सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह में दिया गया सम्बोधन

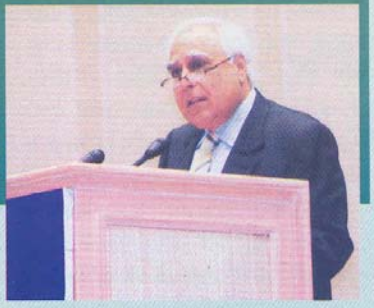

माननीय प्रधानमंत्री का सीएसआईआर पुरस्कार समारोह में पुरस्कार प्रदान करने के लिए स्वागत करना वास्तव में सौभाग्य की बात है। उन्होंने कभी भी आवश्यकता पड़ने पर वैज्ञानिक समुदाय को सहायता देने में हिचक नहीं दिखायी तथा विकास प्रक्रियाओं में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की केन्द्रिकता को हमेशा पहचाना है। आज हमारे साथ यहां उपस्थित होने तथा उत्साहवर्धन के लिए धन्यवाद। इस बार सीएसआईआर ने एक अन्य राष्ट्रीय पुरस्कार - जो ग्रामीण विकास के लिए विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी नवप्रर्वतन के लिए हमारे समाज के अलाभकारी भाग के लिए राष्ट्रीय महत्व को बढ़ाने को प्रदर्शित करता है - का आरम्भ किया है। यह पुरस्कार वर्तमान दो प्रतिष्ठित पुरस्कारों विज्ञान में भटनागर पुरस्कार - जिसे भारत के नोबेल पुरस्कार की संज्ञा दी जाती है तथा हीरक जयन्ती प्रौद्योगिकी पुरस्कार में एक संयोजन है। सभी पुरस्कार विजेताओं तथा उनके सहयोगी सम्बन्धियों/मित्रों सभी का मैं हार्दिक स्वागत करता हूं। मैं अपने सम्मुख भारतीय वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी समुदाय के प्रकांड विद्वानों के समूह को सीएसआईआर को अपने आर्शीवाद तथा शुभकामनाएं देने के लिए धन्यवाद देता हूं। मैं अपने मीडिया के मित्रों का भी स्वागत करना चाहूंगा जिन्होंने विज्ञान के अति आवश्यक संदेशों तथा हमारी वैज्ञानिकों की उपलब्धियों को हमारे लोगों तक पहुंचाया।

महोदय, लगभग 20 वर्ष पूर्व 1986 में राजीव गांधी ने, सीएसआईआर के अध्यक्ष के रूप में सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के मध्य असम्बद्धता तथा उनके उत्पादों की उपयोगिता पर चिन्ता प्रदर्शित की। इसलिये, उन्होंने सीएसआईआर तथा इसकी प्रयोगशालाओं की कार्यप्रणाली का पुनर्विलोकन करने का आदेश दिया। परिणामस्वरूप राजीव गांधी ने सीएसआईआर को और अधिक उपभोक्ता केन्द्रित बनाने तथा इसके एक तिहाई व्यय का वहन सरकारी अनुदानों के बाहर से करने का निदेश दिया। इसका अर्थ मात्र कमाई बढ़ाना नहीं था अपितु वित्तीय जबावदेही का अन्तर्निवेशन कर सीएसआईआर को उपभोक्ता आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उत्तरदायी बनाना था। राजीव जी ने यह भी आशा की कि यह अन्य वैज्ञानिक संस्थापनाओं को भी व्यावसायिक जबावदेही के अनुशासन के लिए प्रेरित करेगा।

महोदय, मुझे सीएसआईआर को राजीव गांधी के इस स्वप्न को काफी हद तक साकार करने के लिए आवश्यक रूप से मुबारकबाद देनी चाहिये। **आज हम पाते हैं कि सीएसआईआर का बाह्य वित्त प्रवाह रु. 340 करोड़ प्रति वर्ष से अधिक हो गया है जिसमें से एक तिहाई निजी सैक्टर से लिया गया है। महोदय, आप यह स्वीकार कर पायेंगे कि सीएसआईआर का प्रदर्शन इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए और भी प्रशंसनीय हो जाता है कि भारतीय उद्योग का आर एण्ड डी में निवेश मात्र आधे प्रतिशत का है और वैसी ही उनकी बिक्री आय (सेल्स टर्नओवर) है। यह रुपान्तरण कौन लाया है? इसके लिए क्रेडिट डॉ. माशेलकर तथा सीएसआईआर परिवार को जाता है।** यह सब उनकी पुरोगामी रिपोर्ट **मार्किटिंग ऑफ सीएसआईआर नोलेजबेस** की प्रस्तुति से, तब आरम्भ हुआ जब वे एनसीएल में थे। महानिदेशक, सीएसआईआर के रूप में पदभार ग्रहण

सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

करने पर उन्होंने इसे सशक्त तथा दृढ़ संकल्पी उत्साह से कार्यान्वित किया। उन्होंने सफलतापूर्वक औरों को भी **मार्किट अनुक्रियाशीलता** और **उपभोक्ता सन्तुष्टि** के विचार को सम्पूर्ण भारतीय वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी समुदाय को अपनाने के लिए प्रेरित किया। आज वैज्ञानिक संस्थान तथा एन्जेसियां एक दूसरे से बाह्य वित्तीय संसाधनों को बढ़ाने के लिए प्रतिस्पर्धा कर रही हैं, जो भारतीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के लिए असाधारण बदलाव है।

जहां तक सीएसआईआर के अनुसंधान परिणामों की उपयोगिता का संबंध है। यह सभी जननिधित्व संस्थाओं विशेष रूप से पेटेण्ट के संबंध में वैश्विक रूप से एक वांछनीय स्थान पर विराजमान है। मैं समझता हूं कि इसका 1000 घरेलू तथा विदेशी पेटेण्टों से अधिक की निवेश सूची में प्रत्येक में विश्व की किसी भी जननिधित्व संस्थान द्वारा प्राप्त सर्वोच्च है। इससे भी अधिक सीएसआईआर मात्र एक ऐसा संस्थान है जिसका अमेरिका द्वारा सभी भारतीय निवेशकों को प्रदत्त पेटेण्ट में एक तिहाई भाग है।

सीएसआईआर को ऐसी प्राथमिक श्रेणी के स्तर तक पहुंचाने का श्रेय डॉ. माशेलकर के परिश्रम से भरपूर प्रयासों तथा दृढ़ता को जाता है, जिन्होंने पिछल वर्षों में पेटेण्ट साक्षरता, सक्षमता निर्माण तथा आईपी प्रबन्धन को बढ़ावा दिया है। यह परिवर्तन 10 वर्ष पूर्व तब आरम्भ हुआ था जब डॉ. माशेलकर ने किसी भी जनप्रतिनिधित्व अनुसंधान तथा विकास के संस्थान के द्वारा पहली बौद्धिक सम्पदा प्रबन्धन नीति का उद्बोधन किया। उसके पश्चात यूएस पीटीओ में हुई लड़ाई जो अब **हल्दी घाटी लड़ाई** के नाम से प्रसिद्ध है, के रूप में सीएसआईआर को विजय प्राप्त हुई; और अभी हाल ही में इन्टरनेशनल पेटेण्ट क्लासीफिकेशन सिस्टम में पारम्परिक ज्ञान के रूप में सम्मिलित होने से अन्तरराष्ट्रीय सफलता प्राप्त हुई।

उल्लेखनीय रूप से सीएसआईआर का **मार्किट अनुक्रियाशील** संगठन के रूप में रुपान्तरण विज्ञान की उत्कृष्टता के मूल्य पर नहीं हुआ है, जैसा कि यूरोप, आस्ट्रेलिया तथा अफ्रीका की अन्य लोकनिधित्व संगठनों के साथ हुआ है। पिछले दशक में विभिन्न प्रकाशनों द्वारा प्रदर्शित सीएसआईआर का विज्ञान निर्गम प्रपत्रों की गुणवत्ता के साथ दुगने से भी अधिक हो गया है तथा सर्वश्रेष्ठ शैक्षिक संस्थानों के साथ तुलना करने पर वर्ष 1995 के औसत इम्पैक्ट फैक्टर 0.85 से वर्ष 2005 में 20 से अधिक हो गया है। यह कोई कम उपलब्धि नहीं है।

महोदय, इससे भी अधिक मुझे इस बात का आश्चर्य हुआ है कि ग्रामीण विकास में वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी अनुसंधान के लिए पहली बार आरम्भ किया गया सीएसआईआर पुरस्कार सीएसआईआर के ही केन्द्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान को प्राप्त हुआ है। डॉ. रामासामी आज हमारे मध्य उपस्थित होने में असमर्थ हैं, फिर भी मैं उन्हें तथा सीएलआरआई के प्रतिबद्ध तथा समर्पित वैज्ञानिकों की पूर्व टीम को जिन्होंने हमारे समाज के अलाभान्वित वर्ग को अपनी आय बढ़ाने तथा अपने जीवन की गुणवत्ता को सुधारने में सहायता की, को बधाई देता हूं।

यह सीएसआईआर को जनसामान्य के लिए किये जाने वाले कार्यों के एक अनछुए रूप को प्रकाश में लाता है।

महोदय, इस बात में कोई सन्देह नहीं कि इन सभी सम्पूर्ण गतिविधियों के साथ सीएसआईआर भारत में तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर एक अत्यन्त प्रशंसनीय अनुसंधान संस्थान है। यद्यपि, राष्ट्र की सीएसआईआर से और अधिक आशाएं है। हम सीएसआईआर को और अधिक ऊंचाइयों की चुनौतियों का सामना करते देखना तथा इसके प्रदर्शन को सर्वोत्कृष्ट होते देखना चाहेंगे। इसकी स्पष्ट घोषणा डॉ. माशेलकर ने अपने दिशा निर्धारक प्रपत्र **सीएसआईआर 2021 :दृष्टिकोण तथा योजना** के द्वारा की है। हमारा राष्ट्र ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना की समाप्ति पर सीएसआईआर के बाह्य वित्त प्रवाह को रु.700 करोड़ प्रतिवर्ष के स्तर तक पहुंचते तथा विदेशी स्रोतों से 40 मिलियन डॉलर प्रतिवर्ष की आय होते देखना चाहता है।

डॉ. माशेलकर जैसे वचनबद्ध नेतृत्व के साथ यह हमारी पहुंच से दूर नहीं है। एक बार पुनः मेरी सभी पुरस्कार विजेताओं को उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए हार्दिक बधाई। आपने राष्ट्र को गौरवान्वित किया है। हम आपकी सफलता को प्रणाम करते हैं।

सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

डॉ. आर.ए. माशेलकर द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव

डॉ. आर.ए. माशेलकर, एफआरएस, महानिदेशक, सीएसआईआर ने यह इंगित करते हुए आरम्भ किया कि **आज एक विशेष दिवस है, आज जो हम देख रहे हैं वह विज्ञान का सर्वश्रेष्ठ है, प्रौद्योगिकी का सर्वश्रेष्ठ है, जो एक ग्लोबल प्रभाव बना रहा है तथा विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का सर्वश्रेष्ठ जो स्थाई प्रभाव बना रहा है।**

उन्होंने प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के इस समारोह में उपस्थित होने तथा पुरस्कार प्रदान करने के लिए अपनी सहमति देने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि **देश के सर्वोच्च विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी सम्मान प्रधानमंत्री द्वारा दिये जाने की परम्परा एक अटूट कड़ी के रूप में सन् 1990 से आज तक चली आ रही है।** उन्होंने डॉ. सिंह के साथ अपनी पहली मुलाकात, जब डॉ. सिंह ने कार्यभार ग्रहण किया था, के समय डॉ. सिंह द्वारा दिये निर्देशों का स्मरण करते यह कहा था **गरीबों के लिए उच्च प्रौद्योगिकी के लिये कार्य करें** और संक्षिप्त में सीएसआईआर के इस दिशा में उठाये गये कदमों का उल्लेख किया था। वास्तव में, डॉ. माशेलकर ने इस विषय पर बहुत से कार्यक्रमों में लोकप्रिय व्याख्यान दिया जिसमें से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में दिया व्याख्यान भी सम्मिलित है, जिसमें श्रोताओं की अभिरुचि गरीबों की सेवा करने की ओर आकर्षित की गयी।

डॉ. माशेलकर ने श्री कपिल सिब्बल विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी तथा भू विज्ञान मंत्री को भी विज्ञान को नयी जीवन ऊर्जा तथा आशा देने के लिए धन्यवाद दिया।

उन्होंने घोषणा की कि यह उनका महानिदेशक, सीएसआईआर के रूप में अन्तिम जनसमारोह है। उन्होंने कहा कि **जैसे कि मैं जा रहा हूं....... मैं मात्र यह कह सकता हूं कि मैंने राष्ट्र की सेवा के लिए अपने सर्वोत्तम प्रयत्न किये तथा मैं आशा करता हूं कि मेरा सर्वोत्तम सही था।** उसके बाद उन्होंने प्रधानमंत्री के शब्दों की पुनरावृत्ति की, जो उन्होंने इस अवसर अपने सम्बोधन में कहे थे, **डॉ. माशेलकर को मुझे यह कहना है कि आपने हमारे देश तथा विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के कारणों की महानतम विशिष्ट सेवा की है। हमारे लोगों की ओर से तथा हमारी सरकार की ओर से मैं आपको हमारी कृतज्ञ शुभकामनाएं देता हूं। हमें आपकी उपलब्धियों पर गर्व है। मैं यह आशा तथा प्रार्थना व्यक्त करते हुए समाप्त करना चाहूंगा कि शायद हमने अभी भी आपका सर्वोच्च नहीं देखा है - सर्वोत्तम का आगमन आना शेष है** और डॉ. माशेलकर ने कहा कि वे **अपने अन्तिम समय तक राष्ट्र तथा मानवता की सेवा करना जारी रखेंगे।**

शान्तिस्वरूप भटनागर पुरस्कार

वर्ष 1957 में स्थापित शान्ति स्वरूप भटनागर पुरस्कार भारत का सर्वाधिक लोकप्रिय वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी पुरस्कार है। इन पुरस्कारों में रु. 2,00,000 का नकद पुरस्कार, एक प्रशस्तिपत्र तथा पट्टिका निम्नलिखित क्षेत्रों में अनुसंधान में कार्यरत जाने माने उत्कृष्ट अनुसंधान, अनुप्रयुक्त अथवा आधारभूत - कार्यों के लिए वार्षिक रूप से दी जाती है (1) जीवविज्ञान (2) रसायन (3) भू, वायुमंडल, महासागर तथा भूमण्डलीय (4) इंजीनियरिंग (5) गणितीय (6) चिकित्सा तथा (7) भौतिक विज्ञान। भारत का कोई भी व्यक्ति जो विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के किसी भी क्षेत्र में अनुसंधान कार्यों में रत है तथा पुरस्कार वर्ष से पूर्व के 31 दिसम्बर को 45 वर्ष से अधिक आयु का नहीं हैं, इसके लिए पात्र होता है।

सीएसआईआर के मतानुसार उनके द्वारा मानव ज्ञान तथा प्रगति - आधारभूत अथवा अनुप्रयुक्त - किसी विषय विशेष क्षेत्र जो उनका विशिष्ट क्षेत्र हो, में महत्वपूर्ण तथा उत्कृष्ट योगदान दिया गया हो। पुरस्कार का वितरण पिछले पांच वर्षों के दौरान मुख्य रूप से भारत में उनके कार्यों के द्वारा योगदान के आधार पर किया जाता है।

सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

वर्ष 2006 के शान्तिस्वरूप भटनागर पुरस्कार विजेता

जीवविज्ञान

डॉ. विनोद भाकूनी, केन्द्रीय औषध अनुसंधान संस्थान लखनऊः डॉ. भाकूनी ने प्रोटीनों में अउत्प्रेरकीय संरचनात्मक डोमेनों (नॉन स्ट्रक्चरल डोमेन) की भूमिका तथा उत्प्रेरकीय डोमेनों (कैटालिटिक डोमनों) की कार्यशील सक्रियता के नियमन में आयनिक इंटरेक्शन को समझने के लिये उत्कृष्ट कार्य किया है।

डॉ. राजेश सुधीर गोखले, राष्ट्रीय रोग प्रतिरक्षा संस्थान, नई दिल्लीः डॉ. गोखले के अनुसंधान कार्य से लांग-चेन फैटी एसिल-एएमपी लाइगेसेस (FAALs) के एक नये कुल की खोज हुई है और उन्होंने वसाम्ल संश्लेषण तथा पॉलीकीटाइड संश्लेषण के मध्य **बायोकैमिकल क्रॉसटाक** की परिमार्जित अथवा उत्तम ढंग से स्पष्ट व्याख्या भी की है, जो **माइकोबैक्टिरियम ट्यूबरकुलोसिस** जीवाणु की जटिल कोशिका भित्ति के विविध असाधारण लिपिड उत्पन्न करते हैं। उनके अध्ययनों ने हमारी इस समझ को कि कैसे रोगाणु (पैथोजन) अपने जीन उत्पादों को मेटाबोलिक डाइवर्सिटी पैदा करने के लिए प्रस्तुत करते हैं, को पर्याप्त विस्तार दिया है।

रसायन विज्ञान

डॉ. श्रीनिवासन सम्पत, भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौरः डॉ. सम्पत ने सुपरकैपेसिटर तथा नैनोबायोमेटेलिकों के विकास और उनके नवीनतम उपयोगों के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान दिया है।

शान्ति स्वरूप भटनागर पुरस्कार के विजेता प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, श्री कपिल सिब्बल, विज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं भूविज्ञान मंत्री तथा सीएसआईआर के महानिदेशक, डॉ. आर.ए. माशेलकर के साथ

डॉ. के. जार्ज थॉमस, क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला तिरुवनंतपुरमः डॉ. थॉमस ने फोटोरिस्पॉन्सिव नैनोमैटिरयल तथा उनके उपयोगों के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान दिया है।

भू, वायुमंडल, महासागर तथा भूमण्डलीय विज्ञान

डॉ. गुफ़रान उल्लाह बेग, इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मेटिरियोलॉजी, पुणेः डॉ. बेग ने मध्य तथा ऊपरी वायुमंडल के ग्रीन हाउस गैसों के मानवोद्‌भवी (एन्थ्रोपोजेनिक) उत्सर्जनों के रिस्पॉन्स से संबंधित अध्ययनों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 2 से 4 के/दशक के मीजोस्फरिक शीतलन के उनके अनुमान ने भविष्य के प्रति गंभीर संकेत दिये हैं।

डॉ. पुलक सेनगुप्ता, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाताः डॉ. सेनगुप्ता ने ग्रेन-स्केल रियक्शन मेकेनिज्म तथा उसके अल्ट्रा-हाई टेम्प्रेचर रिजनल स्केल मेकेनिज्म में अनुप्रयोगों को समझने के लिए बेसिक योगदान दिया है।

अभियांत्रिकी विज्ञान

डॉ. आशीष किशोर लेले, राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणेः डॉ. लेले ने पॉलीमेरिक पदार्थों के माइक्रो और मीजो संरचनाओं की गहन खोज करके और सैद्धान्तिक तथा प्रायोगिक संयोजनों के उपयोग द्वारा उनको मैक्रोस्कोपिक डायनामिकल तथा इक्वीलिब्रियम प्रॉपर्टीज से जोड़कर पथप्रदर्शक योगदान दिया है।

डॉ. संजय मित्तल, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुरः डॉ. मित्तल ने द्रव-संरचना

सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

इंटरेक्शन की उपस्थिति में प्रवाह अस्थायित्व को समझने में, विशेष रूप से तब, जब संरचना नम्य (फ्लेक्सिबिल) हो और अन्योन्यक्रियाएं (इंटरेक्शन्स) उच्च गतिक (डायनामिक) और अस्थिर हों, महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

गणितीय विज्ञान

डॉ. विक्रमन बालाजी, चेन्नई मैथमैटिकल इंस्टीट्यूट, सिरुसेरीः डॉ. बालाजी ने बीजगणितीय विभिन्नताओं की प्रिंसीपल बंडल की माडुलाई समस्याओं विशेषकर सेमीस्टेबल बंडल के माडुलाई स्पेसेज के उहलेनबैकयाजु कम्पेक्टीफिकेशन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके अतिरिक्त सरफेसेज पर स्टेबल बंडल के लिए हॉलोनॉमी ग्रुप पर कार्य भी महत्वपूर्ण है।

डॉ. इन्द्रनील बिस्वास, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेन्टल रिसर्च, मुम्बईः डॉ. बिस्वास एक बहुत ही प्रभावी गणितज्ञ हैं जिन्होंने बीजगणितीय ज्यामितीय विशेषकर वेक्टर बंडल्स की माडुलाई समस्याओं के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वे पैराबोलिक बंडल्स की माडुलाई के भी जाने माने विशेषज्ञ हैं।

चिकित्सा विज्ञान

डॉ.वीरेन्दर सिंह सांगवान, एल.वी. प्रसाद नेत्र संस्थान, हैदराबादः डॉ. सांगवान ने क्षतिग्रस्त कॉर्निया वाले रोगियों में लिम्बल स्टेम सेल बायोलॉजी के प्रयोग द्वारा नेत्रों में दृष्टि पुनः वापस लाने में उत्कृष्ट योगदान दिया है।

भौतिक विज्ञान

डॉ. आतिश दाभोलकर, टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान, मुम्बईः डॉ. दाभोलकर ने स्थापित किया है कि कैसे क्वांटम सिद्धांत ने ब्लैक होल की उत्क्रम माप (एन्ट्रॉपी) को परिवर्तित कर दिया और उन्होंने स्ट्रिंग थ्योरी में सुपर सिमैट्रिक सॉलिशन पर महत्वपूर्ण कार्य किया है।

डॉ. संजय पुरी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्लीः डॉ. पुरी ने नॉनइक्वीलिब्रियम स्टेटिस्टिकल फिजिक्स की जटिलताओं यथा काइनेटिक्स ऑफ फेज ऑडरिंग, कन्फाइन्ड जियोमैटिज के प्रभाव सहित और फेज सेपरेशन डायनामिक में दुष्प्रभावों की भूमिका को समझने में उत्कृष्ट योगदान दिया है।

तेजस नेटवर्क्स इंडिया लिमिटेड, बंगलौर को वर्ष 2006 के लिए सीएसआईआर हीरक जयन्ती प्रौद्योगिकी पुरस्कार

सीएसआईआर हीरक जयन्ती प्रौद्योगिकी पुरस्कार, जो वार्षिक रूप से दिया जाता है, की स्थापना वर्ष 2003 में सीएसआईआर के हीरक जयन्ती स्मरणोत्सव के रूप में की गयी थी। यह भारतीय अन्वेषकों को देश में प्रौद्योगिकी विकास के लिए और जो उच्चतम वैश्विक मानकों को पूर्ण करता है, दिया जाता है। इस पुरस्कार में दस लाख रुपये का नकद पुरस्कार, एक शील्ड तथा एक प्रशस्ति पत्र होता है।

वर्ष 2006 के लिए सीएसआईआर का हीरक जयन्ती प्रौद्योगिकी पुरस्कार तेजस नेटवर्क्स इंडिया लिमिटेड, एक बंगलौर स्थित द्वितीय पीढ़ी कम्पनी, को प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह में दिया गया।

<u>प्रशस्ति पत्र</u>

तेजस नेटवर्क्स इंडिया लिमिटेड एक अन्वेषण चालित कम्पनी को द्वितीय पीढ़ी के ऑप्टीकल (एसीएच/सोनेट) नेटवर्किंग उत्पादों के विकास तथा भारत में इसके सफलतापूर्वक व्यवसायीकरण के लिए सीएसआईआर हीरक जयन्ती प्रौद्योगिकी पुरस्कार 2006 प्रदान किया गया है।

तेजस उत्पादों को उनके अन्तःस्थापित सॉफ्टवेयर बुद्धिमता के द्वारा पहचाना जाता है जिनमें नवीनतम गुण यथा नेटवर्क टोपोलॉजी की ऑटो डिस्कवरी, प्रयोग में सरलता से आरम्भ से अन्त तक स्वचलित प्रावधान, वेब आधारित नेटवर्क प्रबन्धन प्रणाली (एनएमएस) जो ऑप्टीकल नेटवर्क के परिचालन तथा प्रबन्धन का सरलीकरण करती है।

मूल्य प्रभावी मॉडलूयर परन्तु बड़ी मात्रा में उत्पादों का लक्ष्य नेटवर्क की एक सम्पूर्ण रेंज जो लघु एवं मध्यम उपभोक्ताओं से आरम्भ होकर बड़े कैरियर क्लास नेटवर्कों तक होती है तथा कैरियर सुलभ आवश्यकताओं के सम्पूर्ण क्षेत्र को समाहित करती है। प्रौद्योगिकी ऊचाईयां, जो तेजस द्वारा अर्जित की गयी है वे उपभोक्ताओं की स्वीकृति को स्पष्टतः उजागर करती है। भारतीय दूरसंचार कैरियर के अग्रणी उपकरण आपूर्तिकर्ता तथा

सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह तेजस नेटवर्क्स इंडिया लिमिटेड, बंगलौर को वर्ष 2006 का सीएसआईआर हीरक जयन्ती प्रौद्योगिकी पुरस्कार प्रदान करते हुए

सेवा प्रदाता होने के अतिरिक्त तेजस ने तेजस उपकरणों को विश्वभर के लगभग 50 से अधिक देशों में विभिन्न उपभोक्ता नेटवर्कों में सैकड़ों, हजारों की मात्रा में परिनियोजित कर विश्व बाजार में अपनी उपस्थिति दर्ज की है।

इस प्रौद्योगिकी में अपने नेतृत्व की स्थिति बनाये रखते हुए तेजस अब **पैकेटाइज्ड ऑप्टीकल ट्रांसपोर्ट** के क्षेत्र में नवीन उत्पादों की डिलीवरी के लिए आर एण्ड डी पराक्रम का प्रदर्शन करने की ओर अग्रसर है। इन उत्पादों का अभिकल्पन एसडीएच/सोनेट के द्वितीय पीढ़ी के गुणों को एमपीएलएस के साथ एक अटूट तरीके से संयोजित कर तेजस नेटवर्क्स वैश्विक दूरसंचार उद्योग में महत्वपूर्ण कदम रखने के योग्य बनाएगी।

श्री संजय नायक, सीईओ, तेजस नेटवर्क्स इंडिया लिमिटेड ने अपने संक्षिप्त

श्री संजय नायक, सीईओ, तेजस नेवर्क्स इंडिया लिमिटेड स्वीकृति भाषण देते हुए

दृष्टि से की गई थी। यह एक अत्याधिक उत्साहपूर्ण यात्रा रही है तथा ग्लोबल उपकरण कम्पनियां तेजस को अपना भागीदार चुन रही हैं। उन्होंने कहा कि एक स्थिति ऐसी है जब भारत एक ऐसे उत्पाद का विकास कर रहा है जिसे ग्लोबल बहुराष्ट्रीय कम्पनियां ले रही है तथा इस प्रकार स्थिति उलट चुकी है तथा यह हमें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहन देती है।

केन्द्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान, चैन्नई को ग्रामीण विकास में वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिक अनुसंधान के लिए प्रथम सीएसआईआर पुरस्कार

ग्रामीण विकास में विज्ञान तथा प्रौद्योगिक अनुसंधान के लिए सीएसआईआर पुरस्कार की स्थापना इस वर्ष (2006) उन वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी अनुसंधानों को मान्यता देने के लिए की गयी है जिन्होंने ग्रामीण जनता के जीवन में परिवर्तन लाने अथवा ग्रामीण लोगों के नीरस एवं कठिन कार्यों में कमी करने अथवा रोजगार के जनन में सहायता की है। विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के उन सफल आविष्कारों, जिन्हें आधारभूत स्तर पर कार्यान्वित किया गया है, पर इस पुरस्कार के लिए विचार किया जाता है। पुरस्कार में रु. 10 लाख का नकद पुरस्कार, एक शील्ड तथा एक प्रशस्ति पत्र सम्मिलित है।

नई दिल्ली के विज्ञान भवन में एक भव्य समारोह में प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने सीएसआईआर का ग्रामीण विकास में वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिक अनुसंधान के लिए पुरस्कार केन्द्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान (सीएसआरआई) को प्रदान किया।

प्रशस्ति पत्र

ग्रामीण विकास में वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी अनुसंधान के लिए सीएसआईआर पुरस्कार सीएलआरआई को भारतीय चर्म

सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

क्षेत्र में लगे असंख्य लोगों की जीविका में सकरात्मक प्रभाव डालने वाली बहुत सी जटिल प्रौद्योगिकियों के प्रभावशाली अभिकल्पन, विकास तथा हस्तांतरण में सहयोग के लिए दिया गया है।

सीएलआरआई ने बहुत से वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिक अनुसंधान जो ग्राम्य लघु उद्योग क्षेत्र के लिए उपयुक्त हैं, का विकास किया है। ग्रामीण चर्म क्षेत्र में प्रत्यक्ष रूप से लगे लगभग 1.4 मिलियन लोगों के सामाजिक आर्थिक सम्बद्धता की बहुत सी जटिल प्रौद्योगिकियों का अभिकल्पन, विकास तथा हस्तांतरण प्रभावशाली ढंग से किया गया है। इन प्रौद्योगिकियों में गांवों में जीवों के मृत शरीर की भरपूर उपयोगिता तथा पुनर्प्राप्ति के लिए आविष्कारी विधियां, संशोधित वानस्पतिक चर्मशोधन तथा खुले पारम्परिक जूतों (कोल्हापुरी) के मानकीकृत उत्पादन सम्मिलित हैं। सीएलआरआई का विज्ञान तथा प्रौद्योगिक आविष्कारों का मुख्य संयोजक गुण ग्रामीण लघु उद्योगों की कम निवेश सक्षमताओं के साथ सम्बद्धता रखते हुए कम आर्थिकी की सेवाएं उपलब्ध कराना है।

पारम्परिक जूतों के गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए अठानी क्षेत्र में अभिकल्पन बदलाव ने क्षेत्र की ग्रामीण आर्थिकी में एक परिवर्तन ला दिया है। सीएलआरआई द्वारा देश के विभिन्न स्थानों में विकसित तथा हस्तांतरित किये गये प्रौद्योगिकी पैकेज प्रयोग में लाये गये हैं तथा ग्रामीण विकास में इन वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिक आविष्कारों की पुनरावृत्ति के लिए एक मॉडल का कार्य करते हैं। सीएलआरआई का प्रौद्योगिकी पैकेज के हस्तांतरण का प्रचारक जोश अद्वितीय है।

पुरस्कार की घोषणा करते हुए डॉ. आर.ए. माशेलकर ने डॉ. टी. रामासामी, पूर्व निदेशक, सीएलआरआई तथा वर्तमान में सचिव, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार, जो पुरस्कार समारोह में उपस्थित न हो सके, के योगदानों को याद किया।

डॉ. ए.बी. मंडल, कार्यकारी निदेशक, सीएलआरआई, डॉ. एस. नायडु ने टीम सीएलआरआई की ओर से पुरस्कार प्राप्त किया। अपने स्वीकृति भाषण में डॉ. मंडल ने कहा कि **सीएलआरआई, ग्रामीण विकास में वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिक आविष्कार के लिए प्रथम सीएसआईआर पुरस्कार प्राप्त कर गौरवान्वित अनुभव कर रहा है।** उनके संस्मरण श्रोताओं को सीएलआरआई के उन दिनों में वापिस ले गये जब सर सी.वी. रामन ने वहां दौरा किया था। सर रामन ने पूछा था कि सीएलआरआई किस प्रकार के अनुसंधान कर सकता है तथा सीएलआरआई के तत्कालीन निदेशक ने तुरंत इंगित किया कि आमंत्रित विशिष्ट अतिथि के जूते भी चमड़े के बने हुए हैं, जो उच्च विज्ञान का ही परिणाम हैं। डॉ. मंडल ने यह कहते हुए समाप्ति की कि **हम उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए स्वयं को पुनः समर्पित करते हैं। सीएलआरआई की सफलता सीएसआईआर की सफलता है तथा इस प्रकार देश की भी सफलता है।**

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, केन्द्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान (सीएलआरआई), चैन्नई को ग्रामीण विकास में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी आविष्कार के लिए सीएसआईआर पुरस्कार प्रदान करते

डॉ. मनमोहन सिंह, श्री कपिल सिब्बल तथा डॉ. आर.ए. माशेलकर का टीम तेजस तथा टीम सीएलआरआई के प्रतिनिधियों के साथ सामूहिक चित्र

होटल ली मेरिडियन, नई दिल्ली में सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

श्री कपिल सिब्बल, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं भू विज्ञान मंत्री ने सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार तथा वर्ष 2006 के सीएसआईआर प्रौद्योगिकी पुरस्कार प्रदान किये तथा जीनो क्लस्टर का शुभारम्भ तथा अंटार्कटिका पर लिखित सारसंग्रह का विमोचन किया।

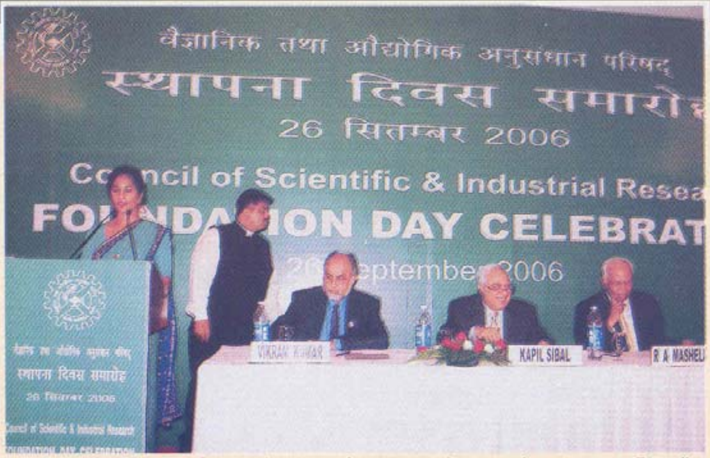

ली मेरिडियन होटल, नई दिल्ली में सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह, मंच पर उपस्थित हैं (दायें से) डॉ. आर.ए. माशेलकर, महानिदेशक, सीएसआईआर, श्री कपिल सिब्बल, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं भू विज्ञान मंत्री तथा डॉ. विक्रम कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, नई दिल्ली

श्री कपिल सिब्बल, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं भू विज्ञान मंत्री ने वर्ष 2006 के लिए होटल ली मेरिडियन, नई दिल्ली में आयोजित सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह में सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार तथा सीएसआईआर प्रौद्योगिकी पुरस्कार 2006, **जीनो-क्लस्टर** - जीनोमिकी और समवेत जीवविज्ञान संस्थान तथा जलाला टैक्नोलॉजिज द्वारा नवशताब्दी भारतीय प्रौद्योगिकी नेतृत्व आरम्भ (एनएमआईटीएलआई) कार्यक्रम के अन्तर्गत संयुक्त रूप से विकसित एक बायोइन्फॉर्मेटिक सॉफ्टवेयर का शुभारम्भ तथा **कन्ट्रीब्यूशन्स ऑफ सीएसआईआर टू एन्टार्कटिक रिसर्च: कलेक्टेड रिप्रिन्ट्स** नामक कम्पेंडियम का विमोचन सम्मिलित थे। **साइंस सफारी** - भारत में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में की गई नयी उपलब्धियों तथा अन्वेषण को प्रदर्शित करती फिल्म, जो विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी और भू विज्ञान मंत्रालय तथा राष्ट्रीय ज्योग्राफिक चैनल का एक संयुक्त प्रयास है, भी पहली बार प्रदर्शित की गयी।

श्री कपिल सिब्बल, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं भू विज्ञान मंत्री तथा उपाध्यक्ष, सीएसआईआर ने अपनी प्रभावशाली उपस्थिति से समारोह की शोभा बढ़ाई तथा पुरस्कार वितरित किये, **जीनो क्लस्टर** का शुभारम्भ तथा अंटार्कटिका पर कम्पेण्डियम का विमोचन किया। श्री सिब्बल को डॉ. आर.ए. माशेलकर, महानिदेशक, सीएसआईआर द्वारा स्मृति चिह्न प्रदान किया गया।

श्री कपिल सिब्बल का भाषण

अपने तैयार भाषण को छोड़कर श्री सिब्बल ने अपने हृदय से निकले उद्‌गारों से सम्बोधित करना पसन्द किया उनकी इस वाकपटुता तथा विचार श्रोतागणों को गहराई तक ओतप्रोत कर गये। उन्होंने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी तथा पुनः कहा कि वे हमेशा सीएसआईआर परिवार तथा वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी समूह का हिस्सा बने रहेंगे।

उन्होंने अपने भाषण के आरम्भ में **एलन लाइटमैन** का उदाहरण देकर पूरी संध्या के लिए वातावरण तैयार कर दिया **सभी वैज्ञानिकों, जिन्हें मैं जानता हूं, में एक गुण सामान्य है: वे जो करते हैं वे करते हैं क्योंकि उन्हें ऐसा करना अच्छा लगता है, क्योंकि वे कुछ और करने की सोच भी नहीं सकते। एक प्रकार से यह वास्तविक कारण है कि एक वैज्ञानिक विज्ञान करता है। क्योंकि एक वैज्ञानिक को अवश्य करना चाहिए। ऐसी बाध्यता आशीर्वाद तथा बोझ दोनों ही है। यह एक आर्शीवाद है क्योंकि एक रचनात्मक जीवन किसी भी प्रयास में एक ऐसा उपहार है जो सुन्दरता से भरपूर है तथा हरेक किसी को नहीं दिया जा सकता, और एक बोझ है क्योंकि पुकार निरन्तर है तथा अपना सम्पूर्ण जीवन लग सकता है।**

सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

भाषण के कुछ अंश

......यह वह निरन्तर पुकार है जिसने डॉ. माशेलकर तथा यहां उपस्थित सभी वैज्ञानिकों को, जो वे हैं, बनाया है। यह सब रोमांच के बारे में है....... एक स्वप्न के बारे में है जो संभव है। इस लड़के ने अपना कैरियर बिना यह जाने शुरू किया कि वह उसे कहां ले जाएगा। वह एनसीएल में आया ग्यारह वर्षों के लम्बे अन्तराल तक सीएसआईआर का नेतृत्व संभाला तथा अब उसे अलविदा कहने में कठिनाई का अनुभव हो रहा है। यही मेरे दिल को छू गया है। वह जीवन के इस रोमांच को - उस उपलब्धि के बिना सोच भी नहीं सकता। ऐसा अनुभव मुझे भी वैज्ञानिक समुदाय के साथ हुआ है।

बुद्धिमता नहीं, बल्कि चरित्र एक वैज्ञानिक को परिभाषित करता है तथा आज इस हॉल में चरित्र की प्रचुरता है।

प्रधानमंत्री ने सही कहा (जबकि वे विज्ञान भवन में डॉ. माशेलकर के विषय में बात कर रहे थे) कि सर्वश्रेष्ठ को अभी आना है। परन्तु जब आप सेवानिवृत्ति की बात करते हैं और उसको उम्र के साथ जोड़ते हैं, तो यह मात्र एक संख्या है, एक शून्य। क्या आप अपने अनुभव को सेवानिवृत्त कर सकते हैं? आपको उसका प्रयोग करना ही होगा। यह वह अनुभव है जो आपको कम शक्ति में अधिक उपलब्धि प्राप्त करने देगा। रोजगार में आप एक दिन का अवकाश ले सकते हैं परन्तु सेवानिवृत्ति में नहीं।

मुझे सर विल्सन चर्चिल की एक कहावत याद आ रही है। उन्होंने कहा था जो हम प्राप्त करते हैं उसके आधार पर निर्वाह करते हैं परन्तु हम जो देते हैं उसके आधार पर जीवन बनाते हैं आपको जानने का अवसर देने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

मैं एक वैज्ञानिक के दिल को जानता हूं उसके भीतर के मनोवेग को जानता हूं तथा उसे समझता हूं। दिमाग से बाजार तक की उड़ान एक उत्तेजक उड़ान है तथा मैंने उसे देखा है। वैज्ञानिकों को आकाश की आवश्यकता नहीं हैं, उन्हें आकाशगंगाओं की आवश्यकता नहीं हैं......।

सोची-समझी, निष्ठुर, निरंकुश, हृदयहीन प्रणाली में विफलता की भावना और मैं इसे समझता हूं। धन की कमी, फाइलों की धीमी गति, नौकरशाही..... परन्तु हमें इसी प्रणाली में कार्य करना है।

मैंने प्रणाली में परिवर्तन लाने का भरसक प्रयास किया है। एक साथ नये भारत की नींव रखने, हम जीवन से क्या चाहते हैं तथा अपने लोगों को क्या देते हैं के लिए एक नयी दृष्टि...... कहना चाहिए कि भविष्य में हम इसे प्राप्त कर लेंगे।

विज्ञान लोगों के बारे में हैं। यह खोजों की यात्रा -- जो कि प्रयोगों की यात्रा है। जितना हम अधिक खोजते हैं उतना ही अधिक हमें पता चलता है कि हम क्या नहीं जानते।

श्री कपिल सिब्बल ने वर्ष 2006 के सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार तथा सीएसआईआर प्रौद्योगिकी पुरस्कार विजेताओं को भी बधाई दी।

जीनो क्लस्टर - एक इन्फॉर्मेटिक्स सॉफ्टवेयर, जिसका विकास जीनोमिकी एवं समवेत जीवविज्ञान संस्थान तथा जलाला टैक्नोलॉजिज द्वारा संयुक्त रूप से एनएमआईटीएलआई के अन्तर्गत किया गया है, का शुभारम्भ करते हुए श्री कपिल सिब्बल ने इंगित किया कि एनएमआईटीएलआई भारत का सर्वाधिक बड़ा जन-निजी भागीदारी का अनुसंधान तथा विकास प्रारम्भ है। बहुत ही कम समय में इस कार्यक्रम को महत्वपूर्ण सफलता मिली है। इसमें टीबी अणु, सोरायासिस रोग के लिए हर्बल औषधि, कम लागत के कम्प्यूटर, मौसम भविष्यवाणी प्रणाली, बायोइंफॉर्मेटिक उत्पाद आदि, जिसमें **जीनो-क्लस्टर** भी एक है, सम्मिलित है।

सारसंग्रह का विमोचनः

कन्ट्रीब्यूशन्स ऑफ सीएसआईआर टू एन्टार्कटिक रिसर्चः कलेक्टेड रिप्रिन्ट्स का विमोचन करते हुए मंत्री ने कहा कि इस प्रकाशन में सीएसआईआर के वैज्ञानिकों द्वारा किये गये वैज्ञानिक कार्यों के सम्बन्ध में राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय एससीआई अनुसंधान पत्रिकाओं में प्रकाशित प्रपत्र हैं तथा इस प्रकार यह पिछले 25 वर्षों में अन्टार्कटिक अनुसंधान में सीएसआईआर वैज्ञानिकों द्वारा किये गये कार्यों का एक समेकित दृष्टिकोण प्रदान करता है।

यह प्रकाशन सीएसआईआर - एक संगठन जिसने बिना किसी बाधा के सभी 25 अभियानों में भाग लिया तथा अग्रणी रूप से अंटार्कटिक अनुसंधान में महत्वपूर्ण सहयोग दे रहा है, के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान है।

श्री कपिल सिब्बल ने बर्फीले महाद्वीप पर अपने अनुभवों के विषय में रोचक ढंग से बताते हुए कहा कि मैंने अन्टार्कटिका का दौरा किया है तथा आज इस पुस्तक के विमोचन से बेहद प्रसन्न हूं......

अन्टार्कटिका में मैंने प्रकृति की विशालता का पता लगाना तथा मानव की असम्बन्धता को खोजा। जैसा कि वे कहते हैं कि जीवन एक मंच है तथा हम एक छोटी भूमिका निभाते हैं.... कुछ फहराती ध्वजा के साथ और कुछ बिना इसके.......

साइंस सफारी के प्रदर्शन के संदर्भ में श्री कपिल सिब्बल ने श्रोताओं का ध्यान इसके विषयः **थिंक बियोन्ड** की ओर आकर्षित किया। उन्होंने कहा कि **यही हम विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्रालय में करने का प्रयत्न कर रहे थे। यह मानव - भारत के महान सुपुत्र, डॉ. माशेलकर को एक भेंट होगी।** उन्होंने श्रोताओं को डॉ. माशेलकर का खड़े होकर अभिनन्दन करने के लिए आमंत्रित किया तथा श्रोताओं का हर्षनाद महानिदेशक को प्रसन्न करने के लिए चरमसीमा तक पहुंच गया।

सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

डॉ. आर.ए. माशेलकर, महानिदेशक, सीएसआईआर द्वारा स्वागत सम्बोधन

इससे पूर्व, डॉ. आर.ए. माशेलकर, महानिदेशक सीएसआईआर ने स्वागत सम्बोधन दिया।

डॉ. माशेलकर ने श्री कपिल सिब्बल का स्वागत करते हुए कहा कि **वे हमारे पूज्यनीय आदरणीय, प्रिय मंत्री......... सीएसआईआर तथा सम्पूर्ण वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी परिवार के गुरू, मार्गदर्शक तथा मित्र हैं** और उसके पश्चात उन्होंने इस तथ्य पर प्रसन्नता व्यक्त की कि **सीएसआईआर की स्थापना के दिवस पर, विज्ञान भवन में इस दिन पूर्व में दिये जाने वाले राष्ट्रीय पुरस्कारों में सीएसआईआर ने अपने आकार को बढ़ाया है। एसएसबी पुरस्कार समारोह में सीएसआईआर के तीन वैज्ञानिकों को यह पुरस्कार प्राप्त हुआ वे हैं - केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के डॉ. भाकूनी, आरआरएल, तिरुवनन्तपुरम के डॉ. जॉर्ज थॉमस तथा राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे के डॉ. आशीष लेले।**

उन्होंने इंगित किया कि **सीएसआईआर का मुख्य कार्य केवल विज्ञान पर कार्य करना नहीं है अपितु राष्ट्र के हित के लिए इस विज्ञान का प्रयोग करना भी है। उन्होंने ग्रामीण विकास में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में जिसकी स्थापना इस वर्ष (2006) उन वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी अनुसंधानों को मान्यता देने के लिए की गयी है, जिन्होंने ग्रामीण लोगों के जीवन में परिवर्तन लाने हैं अथवा ग्रामीण लोगों के निम्न कार्यों में कमी लानी है अथवा रोजगार के उत्सर्जन में सहायता की है।**

उन्होंने कहा कि **उन्हें इस बात का गर्व है कि समिति ने सीएसआईआर की एक प्रयोगशाला को इस पुरस्कार के लिए चुना है। मुझे गर्व है कि हम एक ओर तो विज्ञान का सर्वश्रेष्ठ कर रहे हैं तथा दूसरी ओर समाज को योगदान दे रहे हैं। सीएसआईआर प्रौद्योगिकी लोगों के जीवन -- अधिकतर गरीबों के जीवन में परिवर्तन ला रही है।**

डॉ. माशेलकर ने **ट्रिपल बॉटम लाइन** की उभरती संकल्पना के विषय में बोलते हुए कहा कि **इसका व्यावहारिक रूप में अर्थ वित्तीय प्रदर्शन के साथ-साथ पर्यावरणीय तथा सामजिक प्रदर्शन को ध्यान में रखते हुए पारम्परिक कॉरपोरेट संस्कृति को लाना है।** उन्होंने कहा कि **सीएसआईआर का सम्पूर्ण कार्य** इसी से संबंधित है तथा उसके पश्चात उन्होंने **सीएसआईआर के अस्तित्व की व्याख्या की।**

उन्होंने दोहराया कि **विज्ञान भवन में आज सुबह प्रधानमंत्री का वक्तव्य प्रोत्साहन, प्रौद्योगिकी आधारित त्वरित आन्तरिक वृद्धि की आवश्यकता पर था तथा उन्होंने निष्काषितों को समाहित करने की आवश्यकता पर बल दिया। वास्तव में यही सीएसआईआर है और उसे जो करना चाहिए, वह कर रहा है।** उन्होंने उदास मन से इंगित किया कि **यह अन्तिम वर्ष है जबकि मैं सीएसआईआर के महानिदेशक के रूप में स्थापना दिवस पर उपस्थित हूं। इस वर्ष 31 दिसम्बर को मैं सेवानिवृत्त हो जाऊंगा।**

तत्पश्चात उन्होंने वर्ष 1995 के उन दिनों का स्मरण किया जब उन्होंने कार्यभार ग्रहण किया था और उन्होंने कहा कि **हम कल क्या थे और अब क्या हैं, का एक स्नैपशॉट रह गया है। प्रसन्न होने के कई कारण हैं ...... तथा वर्तमान वर्ष सीएसआईआर के लिए विज्ञान तथा व्यापार के अर्थों में सर्वश्रेष्ठ वर्ष रहा है।**

उन्होंने जोर दिया कि **सीएसआईआर की सार्वजनिक तथा मीडिया संकल्पना पर्याप्त रूप से बढ़ी है। प्रबन्धन की पुस्तकों के सम्पूर्ण अध्याय सीएसआईआर के परिवर्तन को समर्पित हैं तथा विश्व बैंक के अध्यक्ष के स्तर के लोग चाहते है कि राष्ट्रपति पुतिन जैसे नेताओं को सीएसआईआर की कहानी सुनाई जाये।**

उन्होंने चेतावनी भी देते हुए कहा कि **वाकई, हमसे कई अत्याधिक आशाएं भी हैं, हमें तीसरे गियर से चौथे गियर में पहुंचाना होगा तथा यदि कोई पांचवा गियर भी है तो हमें उसे खोजना होगा।**

व्यक्तिगत नोट में उन्होंने सभी का धन्यवाद किया,.......... उस आस्था तथा विश्वास के लिए, **जो इस देश के लोगों ने एक युवा बालक के प्रति दिखाया, जो 12 वर्ष की आयु तक नंगे पैर रहा तथा स्ट्रीटलाइटों में पढ़ा........ मैं इस देश का आभारी हूं। मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ दिया है तथा आशा करता हूं कि यह काफी अच्छा है। परन्तु जैसा कि प्रधानमंत्री ने कहा है कि अभी सर्वश्रेष्ठ का आना शेष है। मैं अन्त तक सेवा करता रहूंगा। मैं आप सभी का इस अद्भुत अवसर देने के लिए धन्यवाद करता हूं।**

डॉ. विक्रम कुमार, निदेशक, एनपीएल, नई दिल्ली धन्यवाद प्रस्ताव देते हुए

डॉ. विक्रम कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, नई दिल्ली ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया जिसके बाद **साइंस सफारी** फिल्म दिखाई गयी।

सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार

वर्ष 1987 में आरम्भ किये गये ये पुरस्कार सीएसआईआर प्रणाली में कार्य कर रहे उन वैज्ञानिकों के लिए जिनकी पिछले वर्ष 26 सितम्बर तक 35 वर्ष की आयु न हुई हो। मुख्यतः भारत में निम्नलिखित क्षेत्रों में काम करने वाले युवा वैज्ञानिकों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रतिवर्ष ये पुरस्कार दिये जाते हैं - भौतिक विज्ञान/इंस्ट्रूमेंटेशन सहित; रसायन विज्ञान; जैविक विज्ञान; इंजीनियरिंग विज्ञान तथा भू, वायुमंडल, महासागर तथा भूमण्डलीय विज्ञान।

इस पुरस्कार के लिये पात्र वैज्ञानिक को सीएसआईआर का नियमित कार्मिक होना अनिवार्य है जिसके पास ग्रुप (वैज्ञानिक बी अथवा उससे ऊपर) का पद होना चाहिए तथा पिछले वर्ष के 26 सितम्बर अथवा उससे पूर्व सीएसआईआर प्रयोगशाला में कार्यभार ग्रहण किया होना चाहिए।

इस पुरस्कार में एक प्रशास्ति पत्र, एक पट्टिका तथा रु. 50,000 का एक नकद पुरस्कार तथा पांच वर्ष के लिए स्वतंत्र रूप से अनुसंधान परियोजना आगे बढ़ाने के लिए दस लाख रुपये का अंशदान दिया जाता है।

वर्ष 2006 के सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार विजेता

जैविक विज्ञान

डॉ. मोहम्मद सोहेल अख्तर, केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान, लखनऊ को **स्ट्रेप्टोकोकस हयालुरोनेट लाइएज** के स्ट्रक्चरल डोमेन की भूमिका तथा इस एन्जाइम की कार्यशील गतिविधियों तथा स्थिरता को मोडुलेट करने वाली आयनिक परस्पर क्रिया की जिज्ञासु अन्तर्दृष्टि उपलब्ध कराने के लिए दिया गया है।

रसायन विज्ञान

डॉ. राजकुमार बैनर्जी, भारतीय रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद को मोलीक्युलर लेवल एप्रोच का प्रयोग कर लक्षित कैंसर सिद्धान्त में महत्वपूर्ण योगदान के लिए दिया गया है।

डॉ. श्रीनिवास होथा, राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे को रासायनिक आनुवंशिक प्रोब के रूप में अनुप्रयोग के लिए शिराल, ऑक्सीजन-प्रचुर रासायनिक लाइब्रेरी के संश्लेषण के नवीन विविधपूर्ण पथों के विकास के लिए दिया गया है।

भू, वायुमंडल, महासागर तथा भूमण्डलीय विज्ञान

डॉ. संदीप कुमार, मुखोपध्याय, केन्द्रीय नमक एवं समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान, भावनगर को ज्वारनदमुखी या एस्चुऐरीन बायोजियोकेमिकल प्रक्रियाओं तथा तटीय आर्द्रभूमि से ग्रीनहाऊस गैस उत्सर्जन को समझने में महत्वपूर्ण योगदान के लिए दिया गया है।

डॉ. प्रकाश कुमार, राष्ट्रीय भूभौतिकीय, अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद को भारतीय प्लेट के लिए क्षेत्रीय प्लेटटेक्टोनिक्स के लिए एक मॉडल के रूप में प्रभाव डालने वाले लिथोस्फीयर-एस्थेनोस्फीयर सीमा को समझने में योगदान के लिए दिया गया है।

इंजीनियरिंग विज्ञान

डॉ. पी. थानीकेइवेलन, केन्द्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान, चैन्नई को चर्म प्रसंस्करण के लिए नया प्रदूषण मुक्त तरीका, जो अत्यन्त औद्योगिक महत्ता का है, के आविष्कार में अतुलनीय योगदान के लिए दिया गया है।

सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार विजेता (वर्ष 2006) विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं भूविज्ञान मंत्री श्री कपिल सिब्बल तथा महानिदेशक, सीएसआईआर डॉ. आर.ए. माशेलकर के साथ

सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

सीएसआईआर प्रौद्योगिकी पुरस्कार

प्रौद्योगिकी विकास, हस्तांतरण, विपणन तथा व्यवसायीकरण के लिए गृहित बहुआयामी, टीम प्रयासों तथा बाह्य वार्ता को पोषित करने तथा बढ़ावा देने के लिए वर्ष 1990 में सीएसआईआर ने प्रौद्योगिकी पुरस्कारों यथा (अ) प्रौद्योगिकी शील्ड तथा (ब) प्रौद्योगिकी पुरस्कारों की दो श्रृंखलाओं का गठन किया।

(अ) प्रौद्योगिकी शील्ड - प्रक्रिया तथा इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकी के लिए एक शील्ड उन प्रमुख बहुआयामी प्रौद्योगिकी भागीदारों/सहयोगियों को दी जाती है जिनका सतत तथा दृश्य आर्थिक, औद्योगिक तथा सामाजिक प्रभाव हो। इस पुरस्कार में एक महत्वपूर्ण रोलिंग शील्ड, एक प्रशस्तिपत्र तथा पट्टिका और विजेताओं को विशिष्ट परियोजना के लिए रु. 30 लाख तक का अनुदान दिया जाता है।

(ब) प्रौद्योगिकी पुरस्कार - चार प्रौद्योगिकी क्षेत्रों यथा जैविक, रासायनिक, अभियान्त्रिकी तथा पदार्थ विज्ञान, प्रत्येक के लिए एक पुरस्कार सीएसआईआर के व्यक्ति विशेष अथवा दल को तथा सीएसआईआर से बाहर के सहयोगी को विशिष्ट तथा उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी उपलब्धियों के लिए दिया जाता है। प्रत्येक प्रौद्योगिकी पुरस्कार में नकद पुरस्कार के रूप में रु.2,00,000, प्रशस्ति पत्र तथा पट्टिका दी जाती है।

व्यापार विकास तथा प्रौद्योगिकी विपणन के लिए पांचवा पुरस्कार जो कि रु. 1,00,000 का है, सीएसआईआर ज्ञानाधार के लिए व्यापार बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए दिया जाता है। यह पुरस्कार व्यक्ति विशेष अथवा दल के सभी सदस्यों को दिया जाता है तथा दल के प्रत्येक सदस्य को एक पट्टिका तथा प्रशस्ति पत्र दिया जाता है।

पिछले सोलह वर्षों की अवधि के दौरान केवल इनमें से आधे पुरस्कार ही दिये जा सके, जो दर्शाते हैं कि इन पुरस्कारों के लिए कितने कठिन नियम तथा सच्चे उच्च मानक हैं। अतः इन पुरस्कारों को पिछले कई वर्षों से आन्तरिक तथा बाह्य दोनों रूपों से उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है।

सीएसआईआर प्रौद्योगिकी शील्ड (वर्ष 2006) के विजेता

इस वर्ष कोई प्रौद्योगिकी शील्ड प्रदान नहीं की गयी तथा सीएसआईआर प्रौद्योगिकी तथा व्यापार संवर्द्धन तथा प्रौद्योगिकी विपणन के लिए पुरस्कार दिये गये।

वर्ष 2006 के सीएसआईआर प्रौद्योगिकी पुरस्कारों के विजेता श्री कपिल सिब्बल तथा डॉ. आर.ए. माशेलकर के साथ

रासायनिक प्रौद्योगिकी के लिये सीएसआईआर प्रौद्योगिकी पुरस्कार

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान (आईआईपी), देहरादून के दल जिसमें ए.के. चटर्जी, यू.सी. अग्रवाल, आर.सी. घिल्डीयाल, वी.के. भाटिया तथा एन.एन. कुलश्रेष्ठ सम्मिलित हैं, को कॉम्ब टाइप पॉलीमेरिक वैक्स क्रिस्टल मॉडीफायर तथा एलओबीएस के उत्पादन के लिए वैक्स हटाने में सहायक योगज के विकास के लिए दिया गया।

वैक्स क्रिस्टल मॉडिफायर एक बहुमुखी टाइप पॉलीमरिक फिल्टर सहायक योगज है जिसका प्रयोग वैक्स हटाने/तेल हटाने के परिचालनों के दौरान गारा-गान्दगी फिल्टरेशन को बढ़ाने में होता है तथा विभिन्न प्रकार के चारे के लिए छोटी खुराक में तथा अन्य व्यावसायिक योगज के मुकाबले अधिक प्रभावी है।

यह क्रिस्टलीकरण के दौरान फिल्टरीकरण में बाधा डालने वाले जमाव/एमोरफस लम्पिंग अथवा जैल निर्माण को रोकती है, उच्च उत्पादन देता है और विलायक तथा अन्य उपयोगिता की कम खपत करता है।

मैसर्स डॉर्फ कैटल, मुम्बई इस योगज का उत्पादन तथा विपणन कर रहा है।

व्यापार विकास तथा प्रौद्योगिकी विपणन के लिए पुरस्कार

केन्द्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान, चैन्नई के दल को इसके ज्ञानाधार के व्यापार तथा विपणन को महत्वपूर्ण ढंग से बढ़ाने के लिए दिया गया है।

पिछले दशक के दौरान सीएलआरआई एक उपभोक्ता संवेदक तथा वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धात्मक अनुसंधान संस्थान के रूप में उभर कर आया है। इसने व्यापार प्रक्रिया के लिए प्रौद्योगिकी भागीदारी मॉडलों को सम्मिलित किया है तथा ज्ञान को बांटने, प्रौद्योगिकी विकसित करने तथा योजनागत परसम्पितयों के मूल्यांकन के लिए एक आय सुलभ मॉडल को स्वीकृत किया है जिससे पिछले दस वर्षों के दौरान बाह्य वित्त प्रवाह में 15-17 प्रतिशत का सतत संचित कुल विकास हुआ है।

डॉ. ए. सुब्बाराम नायडु ने सीएलआरआई दल की ओर से पुरस्कार ग्रहण किया।

सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

जीनो क्लस्टर

ली-मेरिडियन होटल में हुए सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह में श्री कपिल सिब्बल, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं भू विज्ञान मंत्री ने जीनोमिकी तथा समवेत जीवविज्ञान संस्थान (आईजीआईबी) तथा जलाला टैक्नोलॉजिज द्वारा नवशताब्दी भारतीय प्रौद्योगिकी नेतृत्व आरम्भ (एनएमआईटीएलआई) कार्यक्रम के अन्तर्गत संयुक्त रूप से विकसित एक बायोइन्फॉर्मेटिक्स सॉफ्टवेयर **जीनो क्लस्टर** का शुभारम्भ किया।

जीनो क्लस्टर एक सॉफ्टवेयर अनुप्रयोग की संकल्पनाओं पर आधारित एक उच्चतम पहुंच है जो तुलनात्मक जीनोमिकी का आधार है। इस उपकरण का प्रमुख लक्ष्य जीनों, प्रोटीन कार्यप्रणाली तथा वायरुलैंस फैक्टरों की गणना करना तथा आगे पीछे के क्रम से नवीन औषधि अणुओं तथा टीकों के **इन-सिलिको** अभिकल्पन में नवीनतम अनुसंधान करने के लिए एक मंच प्रदान करने का है। उच्च संवेदनशील **कृत्रिम न्यूरल नेटवर्क (एएनएन)** का प्रयोग जीनों/अजीनों/वायरुलेन्ट फैक्टरों को चिह्नित करने के लिए किया जाता है। परिणामों की उच्च परिशुद्धता मशीन से सीखने सांख्यिक जीवविज्ञान संकल्पना की सफलता को दर्शाती है। सॉफ्टवेयर पैकेज में काफी संख्या में अद्वितीय सॉफ्टवेयर उपकरण यथा **जीन डी कफर** (D'cfer), **प्रोटीयोम केलकुलेटर** तथा **सीपाथ** के साथ-साथ आईजीआईबी द्वारा स्वतन्त्र रूप से विकसित **पीएल-एचओ एसटीएफए** (PL-HoSTFA) भी सम्मिलित है।

जीनो क्लस्टर का शुभारम्भ - आईजीआईबी और जलाला टैक्नोलॉजिज दल श्री कपिल सिब्बल, डॉ. आर.ए. माशेलकर तथा डॉ. डी.वाई. राव के साथ

बायोइन्फॉर्मेटिक्स सॉफ्टवेयर का शुभारम्भ करते हुए श्री कपिल सिब्बल ने कहा कि एनएमआईटीएलआई भारत सरकार का सर्वाधिक बड़ा जन-निजी भागीदारी का अनुसंधान तथा विकास प्रारम्भ है। बहुत ही कम समय में इस कार्यक्रम को महत्वपूर्ण सफलता मिली है। इसमें टीबी अणु, सोरायासिस रोग के लिए हर्बल औषधि, कम लागत के कम्प्यूटर, मौसम भविष्यवाणी प्रणाली, बायोइन्फॉर्मेटिक उत्पाद आदि, जिसमें **जीनो क्लस्टर** भी एक है, सम्मिलित हैं।

उन्होंने आगे कहा कि एनएमआईटीएलआई कार्यक्रम नये क्षेत्रों में नवीन अध्याय जोड़ने को तैयार है। यह देश के लिए न केवल आर्थिक तथा औद्योगिक विकास के लिए नवप्रवर्तन चालित प्रौद्योगिकी उपयुक्तता का निर्माण करेगा बल्कि नवप्रवर्तन विकास के लिए नये मॉडलों को खोजने तथा विकास के लिए भी करेगा।

श्री कपिल सिब्बल, डॉ. आर.ए. माशेलकर, डॉ. समीर ब्रह्मचारी, निदेशक, आईजीआईबी, डॉ. डी योगेश्वर राव, प्रमुख, टीएनबीडी (सीएसआईआर) तथा जलाला टैक्नोलॉजिज के प्रतिनिधि इस शुभ अवसर पर मंच पर उपस्थित थे।

साइंस सफारी - एक फिल्म

साइंस सफारी - भारत में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्राप्त की गई नयी उपलब्धियों तथा अन्वेषणों को प्रदर्शित करती फिल्म, जो विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं भू विज्ञान मंत्रालय तथा राष्ट्रीय ज्योग्राफिक चैनल का एक संयुक्त प्रयास है, भी पहली बार प्रदर्शित की गयी।

फिल्म के प्रदर्शन से पूर्व श्री कपिल सिब्बल ने अपने सम्बोधन में श्रोताओं का ध्यान इसके विषयः "थिंक बियोन्ड" की ओर आकर्षित किया। उन्होंने कहा कि यही हम विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्रालय में करने का प्रयत्न कर रहे थे। यह एक मानव -- भारत के महान सुपुत्र, डॉ. माशेलकर को एक भेंट होगी। उन्होंने श्रोताओं को डॉ. माशेलकर का खड़े होकर अभिनन्दन करने के लिए आमंत्रित किया तथा श्रोताओं का हर्षनाद महानिदेशक को प्रसन्न करने के लिए अपनी चरमसीमा तक पहुंच गया।

सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

सार संग्रह

कन्ट्रीब्यूशन्स ऑफ सीएसआईआर टू अन्टार्कटिक रिसर्चः कलेक्टेड रिप्रिन्ट्स का विमोचन

अन्टार्कटिक अनुसंधान में सीएसआईआर अग्रणी रहा है। वास्तव में इसने बिना किसी बाधा के सभी 25 भारतीय अभियानों में भाग लिया है तथा अनुसंधान करने के लिए वैज्ञानिक प्रपत्रों के साथ-साथ समुचित अवसंरचना के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान दिया है।

श्री कपिल सिब्बल, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं भू विज्ञान विज्ञान मंत्री ने **कन्ट्रीब्यूशन्स ऑफ सीएसआईआर टू अन्टार्कटिक रिसर्चः कलेक्टेड रिप्रिन्ट्स** नामक सार संग्रह का विमोचन होटल ली मेरिडियन, नई दिल्ली में आयोजित सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह में किया। सार संग्रह में सीएसआईआर वैज्ञानिकों द्वारा किये गये कार्यों से संबंधित राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय एससीआई अनुसंधान पत्रिकाओं में प्रकाशित प्रपत्र हैं तथा इस प्रकार यह पिछले 25 वर्षों में अन्टार्कटिक अनुसंधान में सीएसआईआर वैज्ञानिकों द्वारा किये गये कार्यों का एक समेकित दृष्टिकोण प्रदान करता है।

कन्ट्रीब्यूशन्स ऑफ सीएसआईआर टू अन्टार्कटिक रिसर्चः कलेक्टेड रिप्रिन्ट्स नामक सार संग्रह का विमोचन

प्रकाशन का विमोचन करते हुए श्री कपिल सिब्बल ने कहा कि यह प्रकाशन सीएसआईआर - एक संगठन जिसने बिना किसी बाधा के सभी 25 अभियानों में भाग लिया तथा अग्रणी रूप से अंटार्कटिक अनुसंधान में महत्वपूर्ण सहयोग दे रहा है, के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान है।

श्री कपिल सिब्बल ने बर्फीले महाद्वीप पर अपने अनुभवों के विषय में रोचक ढंग से बताते हुए कहा कि मैंने अन्टार्कटिका का दौरा किया है और आज मैं इस पुस्तक के विमोचन से बेहद प्रसन्न हूं......।

अन्टार्कटिका में मैंने प्रकृति की विशालता का पता लगाया तथा मानव की सम्बन्धता को खोजा। जैसा कि वे कहते हैं कि जीवन एक मंच है तथा हम एक छोटी भूमिका निभाते हैं..... कुछ फहराती ध्वजा के साथ और कुछ बिना इसके।

सीएसआईआर मुख्यालय, नई दिल्ली में सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

डॉ. आर.ए. माशेलकर ने स्कूली विद्यार्थियों को सीएसआईआर हीरक जयन्ती आविष्कार पुरस्कार प्रदान किये। दोपहर को सीएसआईआर, मुख्यालय में आयोजित एक समारोह में डॉ. आर.ए. माशेलकर, महानिदेशक, सीएसआईआर ने स्कूली विद्यार्थियों को वर्ष 2006 के सीएसआईआर हीरक जयन्ती आविष्कार पुरस्कार प्रदान किये। श्री निखिलेश झा, संयुक्त सचिव; डॉ. नरेश कुमार, प्रमुख, आरपीबीडी; श्री आर.के. गुप्ता, आईपीएमडी; श्री वाई.के. शर्मा, उपसचिव तथा भारी संख्या में सीएसआईआर के वैज्ञानिक तथा अधिकारी एवं स्कूल विद्यार्थी इस समारोह में उपस्थित थे।

स्कूली विद्यार्थियों द्वारा किये जाने वाले आविष्कार के लिए सीएसआईआर हीरक जयन्ती पुरस्कारों की स्थापना विश्व बौद्धिक सम्पदा दिवस 26 अप्रैल 2002 को स्कूली विद्यार्थियों को आविष्कार करने तथा उनके मध्य आईपीआर जारूकता लाने के उद्देश्य से की गयी थी। यह प्रतियोगिता सभी स्कूली विद्यार्थियों, जो अट्ठारह वर्ष से कम आयु के हैं, के लिए है। इस प्रतियोगिता में साठ पुरस्कार दिये जा सकते हैं - प्रथम पुरस्कार 50,000 का है।

सीएसआईआर न केवल ये पुरस्कार प्रदान करता है अपितु पेटेण्ट कराने योग्य आविष्कारों के लिए पेटेण्ट फाइल करने में भी सहायता देता है।

सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

स्कूली विद्यार्थियों के लिए सीएसआईआर हीरक जयन्ती आविष्कार पुरस्कार वर्ष 2006 के विजेता

वर्ष 2006 के लिए कठिन छंटाई के पश्चात मात्र छह विद्यार्थियों का ही इन पुरस्कारों के लिए चयन किया जा सका। **प्रथम पुरस्कार** (रु. 50,000) तथा **द्वितीय पुरस्कार** (रु. 25,000) के लिए किसी को भी योग्य नहीं पाया गया। पुरस्कार विजेता हैं-

तृतीय पुरस्कार

पुरस्कारों की सं. 2, रु. 15,000 प्रत्येक को जी. कार्तिक, बाल विद्या मन्दिर, सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, गांधी नगर, अड्यार, चैन्नई, तमिलनाडु को आयनिक द्रव्य तथा हिटेरोपॉलीएसिड का प्रयोग करके एक नये यौगिक का विकास करने के लिए दिया गया है।

शिखर भण्डारी, बी.वी.बी. मेहता विद्यालय, के.जी. मार्ग, नई दिल्ली को साइकिल बोट का विकास करने के लिए दिया गया है।

चतुर्थ पुरस्कार

पुरस्कारों की सं. 1, रु. 10,000 प्रत्येक को सयाली अरुण कुलकर्णी - फर्ग्युसन जुनियर कॉलेज, पुणे को जैव-निम्नीकरणीय (बायोडिग्रेडेबल) जैविक सामग्री के लिए जल अवशोषक फॉर्मूलेशन और उसके लिए एक मोल्डिंग मशीन विकसित करने के लिए दिया गया।

पांचवां पुरस्कार

पुरस्कारों की सं. 3, रु. 5000 प्रत्येक को वरुण मित्तल, एस.डी. पब्लिक स्कूल, बी.यू.-ब्लॉक, पीतमपुरा, नई दिल्ली को डायमंड ब्लैक मौथ (डीबीएम) **लुटेला जाइलोस्टेला,** के पोषण, विकास तथा जननक्षमता के लिए उपयोगी चिनाबेरी **(मेलिया एजडिरैक)** फल के निष्कर्ष का तेल तैयार करने की विधि का विकास करने के लिए दिया गया है।

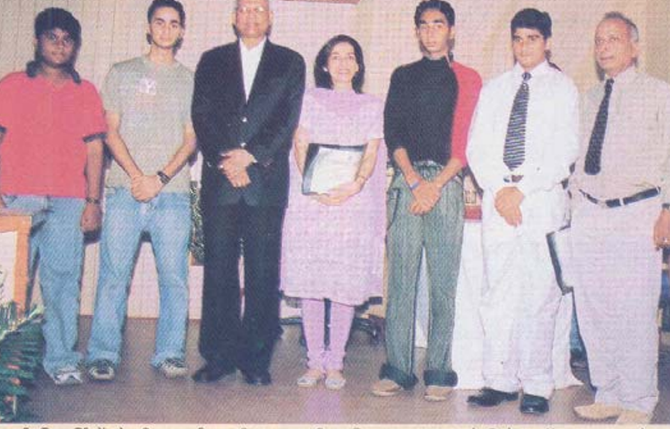

स्कूली विद्यार्थियों के सीएसआईआर हीरक जयन्ती आविष्कार पुरस्कार के विजेता डॉ. आर.ए. माशेलकर तथा श्री आर.के. गुप्ता, प्रमुख, आईपीएमडी, सीएसआईआर के साथ

सीएसआईआर मुख्यालय में आयोजित समारोह में दर्शकगण

नेहा ललित शर्मा - एफ आर एग्नेल मल्टीपरपज स्कूल, सैक्टर-9ए, वाशी, मुम्बई को जानवरों पर द्रवीय औषधि के प्रकीर्णन में उपयोगी नवीन कायिक एप्लीकेटर का विकास करने के लिए दिया गया।

हिमांशु गौड़, केन्द्रीय विद्यालय, ओ.एल.एफ, रायपुर, देहरादून, उत्तरांचल को एक बहुउद्देशीय कोण संसूचक विकसित करने के लिए दिया गया है।

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), डॉ. के.एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली-110012 के लिए वी.के. गुप्ता द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, निस्केयर प्रेस द्वारा मुद्रित।

संपादकः दीक्षा बिष्ट; अनुवादः मीनाक्षी गौड़; डिजाइन एवं ले आऊटः मलखान सिंह; कम्पोजिंगः कृष्णा

फोनः 25841846, 25846301, 2584303, 25842990, 25846304-7/267 ग्रामः PUBLIFORM. New Delhi; फैक्सः 25847062

ई-मेलः csirsamachar@niscair.res.in वेबसाइटः http://www.niscair.res.in पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में फोन नं. 25841647 पर सम्पर्क करें